| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 7, Issue 6, June 2020 ||

शरद जोशी के व्यंग्य साहित्य में समकालीन जीवन का यथार्थ

गीतांजली कोलीवाल

सहायक आचार्य, हिन्दी, राजकीय महाविद्यालय, लूणकरणसर

सार

शरद जोशी तत्कालीन राजनीति व्यवस्था पर करारा व्यंग्य प्रहार करते हैं। आज के राजनेता सिद्धान्तहीन, अनैतिकता, मूल्यहीनता से ग्रस्त है । लगा कि झूठ एवं सत्य की बीच की सीमा रेखा ही गायब होती जा रही है। 'सरकार का जादू' नामक व्यंग्य - लेख में शरद जोशी ने लोकतंत्र में आम जनता की दयनीय स्थिति पर वर्णन किये हैं ।

परिचय

शरद जोशी हिंदी व्यंग्य के सार्वकालिक महान् रचनाकार हैं। विसंगति के ड्डोत, विस्तार और परिणाम की जैसी अचूक परख उनको है, वह उनके समकालीन व्यंग्यकारों तक में दुर्लभ है। हास्य और व्यंग्य का सहजात संबंध उनकी रचनाओं में मौजूद है। बतरस और ललित निबंध के साथ कहावतों व लोकप्रसंगों से विकसित व्यंग्य को शरद जोशी ने हिंदी गद्य का अनिवार्य अंग बनाया। उनके लेखन में विषय-वैविध्य किसी को भी चकित करता है। वे विचार और राजनीति को लेकर बेहद स्पष्ट, पक्षधर, प्रखर और सतर्क लेखक हैं। यही कारण है कि पत्र-पत्रिकाओं में उनके स्तंभों ने एक इतिहास रचा। साहित्य के सैद्धातिक व व्यावहारिक अंतर्विरोधें पर उन्होंने अद्वितीय लिखा है। वे जीवन के अपार व अबूझ से छोटे-छोटे पल लेकर रचनाएं बुनते हैं। उनका एक वाक्य है– 'प्रेम की पीड़ा गहरी होती है, पर गरीबी की पीड़ा उससे भी गहरी होती है।' यही विरल यथार्थबोध है जो परिहास, वक्रोक्ति, आनंद आदि से आगे बढ़कर रचना को किसी दूसरे ही स्तर पर ले जाता है। वे महत्त्वपूर्ण संदर्भों के व्यंग्य लेखक हैं। साहित्य, पत्रकारिता, टी. वी. और सिनेमा में उनके लेखन ने कीर्तिमान बनाए हैं। 'मासूमियत में निहित मर्म और मुस्कान' शरद जोशी के लेखन का मूल मंत्रा है। व्यंग्य समय में शरद जोशी के चयनित व्यंग्य उनके विस्तृत व्यंग्य लेखन से कुछ उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।[1,2,3]

यह अलग बात है कि शरद जोशी व्यंग्य को कोई स्वतंत्र विधा नहीं मानते है। उनके विचार से वह तो सहज प्रवृत्ति है, जो अभिव्यक्ति की विविध विधाओं में रूपायित होती रही है। व्यंग्य की शास्त्रीय मान्यता की भ्रांति से जुड़े विधा- पक्ष की चर्चा करते हुए शरद जोशी जी कहते हैं "आधुनिक व्यंग्य का सर्वाधिक विवादास्पद पहलू उसका साहित्यिक स्वरूप रहा है। साहित्य में व्यंग्य की व्यापकता और लोकप्रियता को देखते हुए कतिपय आलोचक उसे 'विधा' अथवा 'शैली' के चौखटे में बन्द करने का प्रयास करते हैं। अपने अलगपन के कारण यह विधा का आभास देता है। किसी भी विधा की अपनी सुनिश्चित और निर्धारित सीमाएँ होती हैं। किन्तु व्यंग्य को सुनिश्चित और निर्धारित सीमा में नहीं बांधा जा सकता।"

शरद जोशी ने अपनी चुटीली एवं हास्य, मनोविनोद से संपृक्तशैली में अपने सबसे ज्यादा रोचक व्यंग्य लिखे और यही उनके व्यंग्य सृजन की अपनी विशेषता रही है। 80 के एक कवि सम्मेलन का मंच संचालन सोम ठाकुर कर रहे थे उन्होंने शरद जोशी के लिए कहा था " उन्हें गद्य को हास्य में प्रस्तुत करने में पारंगत हासिल है।" उसी मंच पर शरद जोशी ने सरकार पर कटाक्ष करते अपनी एक हास्य रचना का पाठ किया था, "अगर सरकार के पांव भारी हैं, तो उसे कौन हिला सकता है।"

इतना सुनते ही मंचस्थ कवि और उपस्थित श्रोता हँस-हँस कर लोटपोट हो गए थे। तालियों की गड़गड़ाहट से पूरा माहौल गुंजायमान हो उठा था। उन्होंने अपने व्यंग्य में समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार,सरकार की ढुलमुल नीतियों एवं धार्मिक पाखण्डों, कुनबापरस्ती, स्वार्थपरता पर गहरा आघात किया है। वे अपने समकालीन उद्भट साहित्यकारों की आलोचना करने से भी नहीं चूकते थे। उनका कथ्य-सम्प्रेषण उन्हें अपने समकालीन व्यंग्यकारों से अलग चिन्हित कर विशिष्टता प्रदान करता है। व्यंग्य के क्षेत्र में उनकी नूतन प्रयोगधर्मिता उनकी कलात्मक बौध्दिकता को दर्शाती है। निश्चय ही व्यंग्य साहित्य में उनका स्थान अक्षुण्य रहेगा।

आज व्यंग्य की जरूरत इसलिए भी है कि चतुर्दिक विसंगतियों और विडंबनाओं ने समाज को जकड़ लिया है। व्यंग्य एक ऐसा हथियार है, जिससे इन विकृतियों पर प्रहार किया जा सकता है। व्यंग्य की उपादेयता पहले की अपेक्षा आज अधिक बढी है। यह साहित्यिक शक्ति के प्रर्दशन का एक मात्र धारदार जरिया है। जहां शब्द तीर की तरह चलते हैं और सीधे मार करते हैं।[2,3,4]

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 7, Issue 6, June 2020 ||

शरद जोशी आम जनता के भीतर की व्यथा और कसमसाती पीड़ा को अच्छी तरह समझते थे। समाजिक, धार्मिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक, राजनीतिक, विसंगतियों और विकृतियों के खिलाफ सचेत प्रहरी बनकर उन सभी विद्रूपताओं एवं विसंगतियों पर जोरदार प्रहार करते हैं। शरद जोशी व्यंग्य में हास्य की उपस्थिति को जरूरी मानते हैं, उनका मानना है कि इससे व्यंग्य सरल, सहज और पाठकों के लिए बोधगम्य बन जाता है। इससे पाठक जल्दी से विषयवस्तु के भीतर प्रवेश कर जाता है। उसकी चेतना रचना के रसास्वादन के साथ-साथ जागृत होने लगती है,व्यंग्य पाठक की बौध्दिकता को उत्तेजित करता है।

शरद जोशी के पूर्वज गुजराती मूल के ब्राह्मण थे। उनके पिता श्रीनिवास जोशी नौकरी के लिए उज्जैन आकर बस गए थे। उज्जैन के ही मुगरमुट्टे मोहल्ले में 21मई,1931 को शरद जोशी का जन्म हुआ था। पिता रोडवेज में डिपो मेनेजर के पद पर पदस्थ थे। पिता के स्थानान्तरणों की वजह से शरद जोशी का बचपन मऊ, उज्जैन, नीमच, देवास, गुना जैसे छोटे बड़े शहरों में बीता। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उज्जैन में, हाईस्कूल की शिक्षा नीमच और देवास में हुई। इंदौर के होल्कर महाविद्यालय में उन्होंने बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। पिता की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। अतः उन्होंने अपनी उच्च शिक्षा अपने ही लेखनीय पारिश्रमिक से पूरी की। माता शांता जोशी एक धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थी। आधुनिक विचारों के पोषक शरद जोशी एक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति थे। पतले-दुबले सावले रंग के शरद जोशी का दार्शनिक दृष्टिकोण और उनकी बौद्धिक चेतना उन्हें एक विलक्षण व्यक्तित्व प्रदान करती है।

रूढ़िभंजक शरद ने इरफाना सिद्दीकी से प्रेम विवाह किया था। इरफाना सिद्दीकी एक पढ़ी-लिखी मुस्लिम लड़की थी। उस समय इरफाना रंगमंच और कथा साहित्य के क्षेत्र में उभरता हुआ नाम था। दोनों का अन्तरधार्मिक विवाह धर्मभीरु परिवार और समाज को मंजूर नहीं था। लेकिन दोनों ने इसका डटकर सामना किया। दोनों से वाणी, ऋचा, और नेहा तीन बच्चियां हुईं। शरद जोशी एक आदर्श पति और एक आदर्श पिता थे। उन्होंने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिलवाई।

पत्नी इरफाना सिद्दीकी के शब्दों में- "कैसे बताऊँ कि वे कितने स्नेही एवं आदर्श जीवन साथी थे। मैं अपनी बेटियों को उनके पास छोड़कर कहीं भी बेफिक्री से रह सकती थी, वे बड़ी ख़ुशी से मुझसे भी ज्यादा अच्छी तरह से बच्चों की देखभाल कर लिया करते थे।"

शरद जोशी को किताबें पढ़ने और खरीदने का बड़ा शौक था। किताबें खरीदने के लिए जोशी जी अपने आय में से एक बड़ी राशि खर्च कर दिया करते थे। उन्होंने यशपाल, प्रेमचंद, टालस्टाय, बाल्जाक, चेखव, गोर्की, मोपासां, रवीन्द्र नाथ टैगोर, मंटो, कृश्न चन्दर, जैसे शीर्षस्थ साहित्यकारों को खूब पढ़ा। यही नहीं वे उनकी रचनाओं से बहुत प्रभावित भी हुए थे।[3,4,5]

शरद जोशी सेल्फ मेड इंसान थे इसलिए उनमें तुनकमिजाजी एक स्वाभाविक प्रक्रिया की तरह रची- बसी थी। वे अपने तुनकमिजाजी स्वभाव के कारण अपने नजदीकियों को भी शत्रु बना बैठते थे। शरद जोशी एक समय हरिशंकर परसाई के बहुत करीबी मित्रों में से एक थे, लेकिन 'साहित्य का महाबली' शीर्षक व्यंग्य लिखकर उन्होंने परसाई से दुश्मनी ले ली। अशोक बाजपेयी भी कभी उनके घनिष्ठ थे बाद में शरद जोशी उन्हें भी अपना शत्रु बना बैठे। लेकिन यह कहना उचित नहीं होगा कि वे खूसट और अव्यावहारिक किस्म के आदमी थे, सच तो यह है कि वे बड़े मृदुभाषी, निरभिमानी इंसान थे। यह भी सच है कि उन्होंने अपने सिद्धांतों से कभी समझौता नहीं किया। वे बड़े निर्भीक, निडर व्यक्ति थे, तभी तो अपने विरोधियों पर तत्काल व्यंग्य या आलोचना करने से नहीं चूकते थे।

शरद जोशी ने अपने कैरियर की शुरुआत 1955 में अकाशवाणी की छोटी सी नौकरी से की, जहां पर वे पाण्डुलिपि लेखन का कार्य किया करते थे। उसके बाद मध्यप्रदेश सूचना एवं प्रकाशन विभाग में जनसंपर्क अधिकारी रहे, अपने तुनकमिजाजी और महत्वाकांक्षी व्यक्तित्व के कारण उन्होंने वहां की भी नौकरी छोड़ दी, उस समय तक उनकी पहचान एक प्रतिष्ठित व्यंग्यकार के रूप में हो चुकी थी। नौकरी से त्यागपत्र देकर उन्होंने स्वतंत्र लेखन को ही अपने आजीविका का साधन बनाया। व्यावसायिक लेखन के लिए उन्होंने जीतोड़ मेहनत की।

उन्होंने लेखन की शुरुआत कहानी से की थी उसके बाद सैकड़ों व्यंग्य लेख, व्यंग्य उपन्यास, व्यंग्य कॉलम, हास्य-व्यंग्यपूर्ण धारावाहिक एवं फिल्मों के लिए पटकथाएं और संवाद लिखे हैं। उन्होंने कुछ वर्षों तक पत्रकारिता भी की। रेडियो में वार्ता, प्रहसन और नाटक लिखते थे।

वे पूरे पच्चीस साल तक कवि सम्मेलनीय मंचों की शोभा बढ़ाते रहे। ज्ञात हो कि शरद जोशी कवि सम्मेलनों में कविता नहीं गद्य पाठ किया करते थे। उन्हें साहित्य में एक विशेष पहचान तब मिली जब धर्मवीर भारती ने उनकी एक व्यंग्य रचना "गागरिन का यात्रा -भत्ता " धर्मयुग में प्रकाशित किया।

फिल्म लेखन के क्षेत्र में शरद जोशी ने कई टीवी धारावाहिकों की पटकथाएं और संवाद लिखे, जो बहुत लोकप्रिय और चर्चित हुए। कुछ वर्ष पहले 'सब' चैनल पर उनकी कहानियों और व्यंग्य पर आधारित 'लापतागंज' 'शरद जोशी की कहानियों का पता' का प्रसारण किया जाता था, जिसे लोगों ने खूब पसंद किया।

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 7, Issue 6, June 2020 ||

हरिहर जोशी, केपी सक्सेना, नरेन्द्र कोहली और मुज्तबा हुसैन उनके अभिन्न मित्रों में से थे। शरद जोशी की संघर्षशीलता और साहसिकता उनकी लेखनी में परिलक्षित होती है। उनका आखिरी मुकाम मुंबई रहा। उन्हें हृदयरोग, और मधुमेह की बीमारी थी। 5 सितंबर, 1991 को मुम्बई में ही उन्होंने अपने जीवन की अन्तिम सांस ली।

विचार-विमर्श

शरद जोशी का व्यंग्य- उफ! तुम कब जाओगे, अतिथि!
तुम्हारे आने के चौथे दिन, बार-बार यह प्रश्न मेरे मन में उमड़ रहा है, तुम कब जाओगे अतिथि! तुम कब घर से निकलोगे मेरे मेहमान!
तुम जिस सोफे पर टाँगें पसारे बैठे हो, उसके ठीक सामने एक कैलेंडर लगा है जिसकी फड़फड़ाती तारीखें मैं तुम्हें रोज दिखा कर बदल रहा हूँ। यह मेहमाननवाजी का चौथा दिन है, मगर तुम्हारे जाने की कोई संभावना नजर नहीं आती। लाखों मील लंबी यात्रा कर एस्ट्रॉनॉट्स भी चाँद पर इतने नहीं रुके जितने तुम रुके। उन्होने भी चाँद की इतनी मिट्टी नहीं खोदी जितनी तुम मेरी खोद चुके हो। क्या तुम्हें अपना घर याद नहीं आता? क्या तुम्हें तुम्हारी मिट्टी नहीं पुकारती?

जिस दिन तुम आए थे, कहीं अंदर ही अंदर मेरा बटुआ काँप उठा था। फिर भी मैं मुस्कराता हुआ उठा और तुम्हारे गले मिला। मेरी पत्नी ने तुम्हें सादर नमस्ते की। तुम्हारी शान में ओ मेहमान, हमने दोपहर के भोजन को लंच में बदला और रात के खाने को डिनर में। हमने तुम्हारे लिए सलाद कटवाया, रायता बनवाया और मिठाइयाँ मँगवाईं। इस उम्मीद में कि दूसरे दिन शानदार मेहमाननवाजी की छाप लिए तुम रेल के डिब्बे में बैठ जाओगे। मगर, आज चौथा दिन है और तुम यहीं हो। कल रात हमने खिचड़ी बनाई, फिर भी तुम यहीं हो। आज हम उपवास करेंगे और तुम यहीं हो। तुम्हारी उपस्थिति यूँ रबर की तरह खिंचेगी, हमने कभी न सोचा था।

सुबह तुम आए और बोले, "लॉन्ड्री को कपड़े देने हैं।" मतलब? मतलब यह कि जब तक कपड़े धुल कर नहीं आएँगे, तुम नहीं जाओगे? यह चोट मार्मिक थी, यह आघात अप्रत्याशित था। मैंने पहली बार जाना कि अतिथि केवल देवता नहीं होता। वह मनुष्य और कई बार राक्षस भी हो सकता है। यह देख मेरी पत्नी की आँखें बड़ी-बड़ी हो गईं। तुम शायद नहीं जानते कि पत्नी की आँखें जब बड़ी-बड़ी होती हैं, मेरा दिल छोटा-छोटा होने लगता है।
कपड़े धुल कर आ गए और तुम यहीं हो। पलंग की चादर दो बार बदली जा चुकी और तुम यहीं हो। अब इस कमरे के आकाश में ठहाकों के रंगीन गुब्बारे नहीं उड़ते। शब्दों का लेन-देन मिट गया। अब करने को को चर्चा नहीं रही। परिवार, बच्चे, नौकरी, राजनीति, रिश्तेदारी, पुराने दोस्त, फिल्म, साहित्य। यहाँ तक कि आँख मार-मार कर हमने पुरानी प्रेमिकाओं का भी जिक्र कर लिया। सारे विषय खत्म हो गए। तुम्हारे प्रति मेरी प्रेमभावना गाली में बदल रही है। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि तुम कौन सा फेविकॉल लगा कर मेरे घर में आए हो?

पत्नी पूछती है, "कब तक रहेंगे ये?" जवाब में मैं कंधे उचका देता हूँ। जब वह प्रश्न पूछती है, मैं उत्तर नहीं दे पाता। जब मैं पूछता हूँ, वो चुप रह जाती है। तुम्हारा बिस्तर कब गोल होगा अतिथि?
मैं जानता हूँ कि तुम्हें मेरे घर में अच्छा लग रहा है। सबको दूसरों के घर में अच्छा लगता है। यदि लोगों का बस चलता तो वे किसी और के घर में रहते। किसी दूसरे की पत्नी से विवाह करते। मगर घर को सुंदर और होम को स्वीट होम इसीलिए कहा गया है कि मेहमान अपने घर वापिस लौट जाएँ।[5,6,7]

परिणाम

'शरद जोशी' (१९३१-१९९१) हिन्दी जगत के प्रमुख व्यंगकार

शरद जोशी का जन्म मध्य प्रदेश के उज्जैन शहर में २१ मई १९३१ को हुआ।

जीवन परिचय - कुछ समय तक यह सरकारी नौकरी में रहे, फिर इन्होंने लेखन को ही आजीविका के रूप में अपना लिया।

लेखन परिचय - आरम्भ में कुछ कहानियाँ लिखीं, फिर पूरी तरह व्यंग्य-लेखन ही करने लगे। इन्होंने व्यंग्य लेख, व्यंग्य उपन्यास, व्यंग्य कॉलम के अतिरिक्त हास्य-व्यंग्यपूर्ण धारावाहिकों की पटकथाएँ और संवाद भी लिखे। हिन्दी व्यंग्य को प्रतिष्ठा दिलाने प्रमुख व्यंग्यकारों में शरद जोशी भी एक हैं। इनकी रचनाओं में समाज में पाई जाने वाली सभी विसंगतियों का बेबाक चित्रण मिलता है।[6,7,8]

प्रमुख व्यंग्य-कृतियाँ

गद्य रचनाएँ परिक्रमा, किसी बहाने, जीप पर सवार इल्लियाँ, रहा किनारे बैठ, दूसरी सतह, प्रतिदिन(3 खण्ड), यथासंभव, यथासमय, यत्र-तत्र-सर्वत्र, नावक के तीर, मुद्रिका रहस्य, हम भ्रष्टन के भ्रष्ट हमारे, झरता नीम शाश्वत थीम, जादू की सरकार, पिछले दिनों, राग भोपाली, नदी में खड़ा कवि, घाव करे गंभीर, मेरी श्रेष्ठ व्यंग रचनाएँ,

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 7, Issue 6, June 2020 ||

दो व्यंग्य नाटक अंधों का हाथी, एक था गधा उर्फ अलादाद खाँ

उपन्यास' मैं, मैं और केवल मैं उर्फ़ कमलमुख बी0ए0

टीवी धारावाहिक यह जो है जिंदगी, मालगुड़ी डेज, विक्रम और बेताल, सिंहासन बत्तीसी, वाह जनाब, दाने अनार के, यह दुनिया गज़ब की, लापतागंज,

फिल्मी सम्वाद क्षितिज, गोधूलि, उत्सव, उड़ान, चोरनी, साँच को आँच नहीं, दिल है कि मानता नहीं

1950 के दशक के उत्तरार्ध में, जब शरद जोशी इंदौर में समाचार पत्रों और रेडियो के लिए लिख रहे थे, तब उनकी मुलाकात इरफ़ाना सिद्दीकी (बाद में इरफ़ाना शरद) से हुई और उन्होंने शादी कर ली। वह भोपाल की एक लेखिका, रेडियो कलाकार और थिएटर अभिनेत्री थीं। इस जोड़े की तीन बेटियाँ थीं: बानी, ऋचा और नेहा शरद। नेहा शरद एक अभिनेत्री और कवयित्री हैं। शरद जोशी ने राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विषयों पर कई व्यंग्यात्मक निबंध लिखे हैं, जैसे अथ श्री गणेशाय नमः , अरबों का अर्थ शास्त्र , बुद्धिजीवी , साहित्य का महाबली , अध्यापक महोदया [4] ।

शरद जोशी ने व्यंग्य नाटक भी लिखे। उनके नाटक एक था गधा उर्फ़ अलादाद खान और अंधों का हाथी व्यंग्य और शाश्वत हास्य के लिए लोकप्रिय हैं [5]

उनकी पुस्तकों और निबंध संग्रहों में परिक्रमा, किसी बहाने, तिलस्म, जीप पर द सवार इलियान, राह किनारे बैठ, मेरी श्रेष्ठ रचनाये, दूसरी सताह, यथा संभव, यत्र तत्र सर्वत्र, यथा समय, हम भ्रष्टाचार के भ्रष्ट हमारे, और प्रतिदिन शामिल हैं

मध्य प्रदेश सरकार ने उनकी स्मृति में "शरद जोशी सम्मान" नामक एक पुरस्कार की स्थापना की है, जो हर साल लेखन के क्षेत्र में उत्कृष्ट उपलब्धि के लिए व्यक्तियों को दिया जाता है। इसमें रुपये का नकद पुरस्कार शामिल है। 51,000 और प्रशस्ति पत्र. [10]

उनकी बेटी नेहा शरद ने भी अपने पिता के काम को मनाने के लिए 2016 में शरदोत्सव, एक साहित्यिक और थिएटर उत्सव (जिसमें नाटकों के साथ-साथ एक पुस्तक मेला भी होता है) का आयोजन किया था। [8,9]

निष्कर्ष

शरद जोशी सम्मान ,उत्कृष्ट सृजन को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित करने की अपनी सुप्रतिष्ठित परम्परा का अनुसरण करते हुए मध्यप्रदेश शासन ने हिन्दी व्यंग्य, ललित निबन्ध, संस्मरण, रिपोर्ताज, डायरी, पत्र इत्यादि विधाओं में रचनात्मक लेखन के लिए स्थापित किया है। यह गौरव की बात है कि शरद जोशी मध्यप्रदेश के निवासी थे, जिन्हें उनकी सशक्त और विपुल व्यंग्य रचनाओं ने साहित्य के राष्ट्रीय परिदृश्य पर प्रतिष्ठित किया। शरद जोशी ने व्यंग्य को नया तेवर और वैविध्य दिया तथा समय की विसंगति और विडम्बना को अपनी प्रखर लेखनी से उजागर करते हुए समाज को दृष्टि और दिशा प्रदान करने का उत्तारदायी रचनाकर्म किया। उनकी व्यंग्य रचनाओं ने हिन्दी साहित्य की समृद्धि में अपना सुनिश्चित योगदान दिया है। राष्ट्रीय शरद जोशी सम्मान का उद्देश्य साहित्य की ऐसी विधाओं की श्रेष्ठतम प्रतिभाओं को सम्मानित करना है जो कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, आलोचना आदि केन्द्रीय विधाओं में रचना न करते हुए भी अन्य सर्जनात्मक विधाओं के माध्यम से साहित्य की समृद्धि और बहुलता में अपना योगदान देती हैं। निश्चय ही यह सम्मान रचनात्मक उत्कृष्टता, सुदीर्घ साधना और असाधारण उपलब्धि के निविर्वाद मानदण्डों पर ही देय है।

सम्मान के अन्तर्गत ₹ 1 लाख की राशि और प्रशस्ति पट्टिका दी जाती है।[10,11]

प्राप्तकर्ता

राष्ट्रीय शरद जोशी सम्मान

1. हरिशंकर परसाई 1992-93
2. मनोहर श्याम जोशी 1993-94

| ISSN: 2395-7639| www.ijmrset.com| Impact Factor: 7.580 | A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Journal |

|| Volume 7, Issue 6, June 2020 ||

3.	लाल शुक्ल	1994-95
4.	विवेकी राय	1996-97
5.	रामशरण जोशी	1997-98
6.	रवीन्द्रनाथ त्यागी	1998-99
7.	कृष्ण कुमार	1999-00
8.	काशीनाथ सिंह	2000-01
9.	अमृतलाल वेगड़	2001-02
10.	प्रयाग शुक्ल	2002-03
11.	दूधनाथ सिंह	2003-04
12.	डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी	2004-05
13.	कृष्ण चराटे	2005-06
14.	बिशन टण्डन	2006-07
15.	आलोक मेहता	2007-08
16.	के.पी. सक्सेना, लखनऊ	2008-09
17.	गुलाब कोठारी, जयपुर	2009-10
18.	वर्ष 2010-11	शून्य घोषित
19.	वर्ष 2011-12	
20.	माणिक वर्मा, हरदा	2012-13

संदर्भ

1. "पद्म पुरस्कार" (पीडीएफ) । गृह मंत्रालय, भारत सरकार। 2015. 15 अक्टूबर 2015 को मूल (पीडीएफ) से संग्रहीत । 21 जुलाई 2015 को लिया गया .
2. ^ "व्यंग्यकार शरद जोशी ने कहा कि हमने विश्व नेता प्रधान मंत्री को चुना" । www.patrik.com . 27 जून 2016 को लिया गया ।
3. ^ "फिल्म राइटर्स एसोसिएशन" । fwa.co.in। 8 सितंबर 2015 को मूल से संग्रहीत । 27 जून 2016 को लिया गया ।
4. ^ दत्ता, अमरेश (1 जनवरी 1988)। भारतीय साहित्य का विश्वकोश: देवराज से ज्योति तक । साहित्य अकादमी. पी। 1863. आईएसबीएन 9788126011940.
5. ^ "...और सब एक गधे की खातिर - डीएनए - अंग्रेजी समाचार और विशेषताएं - कला और संस्कृति - dnasyndicate.com" । dnasyndicate.com । 1 जुलाई 2016 को लिया गया ।
6. ^ "दिल्ली यूनिवर्सिटी वर्चुअल लर्निंग - शरद जोशी: जीवन और साहित्य" । vle.du.ac.in। 1 जुलाई 2016 को लिया गया ।
7. ^ "शरद जोशी" । गुडरीड्स । 1 जुलाई 2016 को लिया गया ।
8. ^ "इंडिया टेलीविज़न" । Indiantelevision.com. 30 अगस्त 2001 । 26 सितंबर 2011 को पुनःप्राप्त .
9. ^ भाषा. "शरद जोशी: साहित्य | शरद जोशी: हिंदी के अनुठे अनचाहाकार" । वेबदुनिया । 1 जुलाई 2016 को लिया गया ।
10. ^ मध्य प्रदेश समाचार
11. ^ "शरदोत्सव-16 : शरदजी की याद में अनोखा मेला, दादी के साथ रचना पाठ भी" । 27 जून 2016 को लिया गया ।